ऋषि के तरानें

(महर्षि दयानन्द गुणगान)

संकलन–सम्पादन–रचनाकार

कंचन कुमार

208–B पश्चिम विहार एक्सटेंशन
नई दिल्ली –110 063

प्रकाशक :

दीप्ति प्रकाशन

प्रकाशक :

दीप्ति प्रकाशन

208-B पश्चिम विहार एक्सटेंशन, नई दिल्ली–63

वितरक :

गायत्री सत्संग सभा

208-B पश्चिम विहार एक्सटेंशन, नई दिल्ली–63

संकलन–सम्पादन–रचनाकार

कंचन कुमार

फोन : 25217058, 9868717038

सेवा : 20/– रुपये मात्र
30/– रुपये (सजिल्द)

मुद्रक :

हेमा

फोन : 25212403

सम्पादन सहयोग :

दिव्या आर्या

दो शब्द

महर्षि दयानन्द सरस्वती भारत के ही नहीं बल्कि विश्व के युग पुरूष थे । एक उच्चकोटि के विद्वान, महान विचारक एवं सांस्कृतिक क्रान्तिकारी, समाज सुधारक और भारतीयता के प्रबल समर्थक थे । वेदों की पुनर्स्थापना के लिए उन्होने अपना जीवन लगा दिया । सामाजिक एवं साम्प्रदायिक कुरीतियों, छुआछूत, अन्ध विश्वासों के विरूद्ध उन्होंने कठोर संधर्ष किया । दलित वर्ग, नारी शोषण और जाति–पाति के भेद–भाव व पाखण्डों के विरोध में उन्होने आजीवन संधर्ष किया ।

ऐसे महापुरूष की महिमा को जितना भी लिखा जाए कम है फिर भी भारत के कवियों मनीषियों ने जो लिखा है उसको इस पुस्तक में समेटने का छोटा–सा प्रयास किया है ।

ऋषि भक्तों के लिए संभवता यह अनुपम भेंट होगी कि सभी उपलब्ध रचनाऐं एक ही पुस्तक में मिले। इसी विचार के साथ ऋषि के तरानें प्रबुद्ध आर्यजनों के हाथों में है ।

मेरी अपनी नई रचनाऐं भी इस पुस्तक में शामिल कर दी गई है । आशा है ऋषि भक्त अवश्य लाभान्वित होंगे ।

आप सबका प्रिय
(कंचन कुमार)

जीवन परिचय

''स्वामी दयानन्द सरस्वती''

स्वामी जी का जन्म 1824 में गुजरात प्रांत के ''टंकारा'' नामक गाँव में हुआ स्वामी विरजानन्द जी से वेद , शास्त्रों एवं व्याकरण का ज्ञान प्राप्त कर , देश में फैले अज्ञान , पाखण्ड आदि को दूर करने के लिये 'वेदों का भाष्य, ''संस्कारविधि'' तथा ''सत्यार्थ प्रकाश'' जैसे विशालतम एवं मौलिक ग्रन्थों की रचना की ।

उन्होंने अपने समय के विचारकों के मस्तिष्क में मौलिक तथा रचनात्मक विचारों से हलचल मचा दी । उन्होने जहाँ रूढ़िवाद तथा मतवाद पर कुठाराधात किया , वहीं पश्चिम से उफन रहे भौतिकवाद को भी रोका । भारत के ऋषि , मुनियों एवं दार्शनिकों की धरोहर 'प्राचीन वैदिक संस्कृति' की प्राण–प्रतिष्ठा की और उसे स्थिर एवं मूर्तरूप देने के लिये ''आर्य समाज'' नामक संस्था की स्थापना की । अनेक शास्त्रार्थ किये तथा लोगों को वेदों की ओर लौटने की प्रेरणा दी । अजमेर में 1883 में ऋषिवर का देहावसान हुआ ।

उस विश्वमानव की यह घोषणा आज भी हमें प्रेरित करती है :

''यद्यपि मैं आर्यावर्त में उत्पन्न हुआ हूँ और बसता हूँ तथापि जैसे इस देश के मत–मतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूँ , दूसरे देशस्थ व मनोवृत्ति वालों के साथ भी बर्तता हूँ । जैसे स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के बारे में बर्तता हूँ वैसे विदेशियों के साथ भी । ''

महर्षि ने सर्वप्रथम सशक्त , स्वाधीन , प्रभुता – सम्पन्न तथा समृद्ध राष्ट्र के निर्माण की परिकल्पना की थी । उन्होने धोषणा की थी कि देशवासियों को विज्ञान और शिल्पविद्या का उपयोग कर आत्म निर्भर व आर्थिक उत्पादन में वृद्धि के साथ – साथ वैज्ञानिक आविष्कारों द्वारा देश की बहुमुखी उन्नति का प्रयत्न करना चाहिये ।

''ऋषि दयानन्द महापुरूषों की दृ ि ट में''

– महर्षि दयानन्द हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियों में, सुधारकों में और श्रेष्ठ पुरूषों में एक थे । इनका चरित्र मेरे लिए ईर्ष्या का विषय है । उनके जीवन का प्रभाव हिन्दुस्तान पर बहुत अधिक पड़ा है ।

–मोहनदास कर्मचन्द गांधी

– मेरा प्रथम प्रणाम उस गुरू दयानन्द को है, जिसका उद्देश्य भारतवर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्त्व के अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जागृति में लाना था । उसे मेरा बारम्बार प्रणाम है । आधुनिक भारत के मार्गदर्शक महि ि दयानन्द जी सरस्वती को मैं सादर श्रद्धांजलि समर्पित करता हूं ।

–रवीन्द्रनाथ ठाकुर

– इस बात का श्रेय दयानन्द को ही प्राप्त होग कि उन्होने सर्वप्रथम वेदों की व्याख्या के लिए निर्दोष मार्ग का अवलम्बन किया था । ऋषि दयानन्द ने उन द्वारों की कुँजी प्राप्त की है जो युगों से बन्द थे और उससे पटे हुए झरनों का मुख खोल दिया ।

–अरविन्द धोष

– स्वामी दयानन्द एक विद्वान् थे । उनके धर्म नियमों की नींव ईश्वर–कृत वेदी पर थी । उन्हें वेद कण्ठस्थ थे । उनके मन और मस्तिष्क में वेदों ने घर किया हुआ था । वर्तमान समय में संस्कृत का एक ही बड़ा विद्वान् , साहित्य का पुतला, वेदों के महत्त्व को समझने वाला, अत्यन्त प्रबल नैयायिक और विचारक यदि भारतवर्ष में हुआ है तो वह महर्षि दयानन्द सरस्वती ही था ।

–मैक्समूलर

– वह इतने अच्छे और विद्वान् आदमी थे कि प्रत्येक धर्म के अनुयायियों के लिए सम्मान के पात्र थे ।

–सर सैयद अहमद खाँ

दिन को जिसे चैन न था न रात को आराम था ।
दिल में एक दर्द लिए फिरता सुबह शाम था ।
"पथिक" अपनी जान दे के जान हम में डाल गया ।
उसका स्वामी दयानन्द सरस्वती नाम था ।

भरे दरिया भला कब नीर अपना खुद पिया करते हैं ।
नहीं खुद वृक्ष फल खाते वे औरों को ही दिया करते हैं ।
जो सच्चे सन्त होते हैं नहीं सिर्फ अपने लिए जीते ,
वे दुनियां में 'पथिक' दुनियां की खातिर ही जिया करते हैं ।

भजन

गुजरात से था कौन आया

तर्ज : उड़े जब जब जुलफे तेरी

गुजरात से था कौन आया।
दयानन्द नाम उनका।।
सारी दुनिया को जिसने जगाया।
दयानन्द नाम उनका।।

गुरू विरजानन्द का चेला।
लाखों में एक अकेला।।
दयानन्द नाम उनका।

वेदों का था जो दीवाना।
सारी दुनिया ने जिनको माना।।
दयानन्द नाम उनका।

कौन आया बनके माली।
छा गई जिनसे हरियाली।।
दयानन्द नाम उनका।

एक आर्य समाज बनाया।
आंधी में दीप जलाया।।
दयानन्द नाम उनका।

रचना :— कंचन कुमार

वेदा वाले ऋषिया तेरी

तर्ज : चाँदी जैसा रंग है तेरा

वेदा वाले ऋषिया तेरी कोई नहीं मिसाल ।
एक तू है बेमिसाल दयानन्द, तू ने किया है कमाल।।

इस दुनिया ने ज़हर के प्याले, कितनी बार पिलाए ।
तू ने काँटे चुनकर सब राहों पे फूल खिलाए।।

तेरे सत्यार्थ प्रकाश ने सारे मन के भेद मिटाए ।
वेद मार्ग तू ने दिखलाया सबको किया निहाल।।

बिगुल क्रान्ति का सबसे पहले तू ने यहाँ बजाया ।
और स्वराज का सबसे पहले तुमने अर्थ बताया ।।

तुमने ऋषियों की वाणी का अमृत हमें पिलाया ।
देकर ज्ञान की ज्योति सबको, तुमने किया खुशहाल।।

तेरे पग छूते ही धंरा की माटी हो गई 'कंचन' ।
तुमको सौ—सौ नमस्कार तुमको शत—शत है वन्दन।।

हम सब मिलकर आर्यजन करते तेरा अभिनन्दन ।
गाते है यश दसों दिशाएं धरती गगन विशाल ।।

रचना :— कंचन कुमार

सानु सुत्तेया कौन जगौंदा

तर्ज : सानु एक पल चैन ना आवे सजना तेरे बिना

सानु सुत्तेया कौन जगौंदा, ऋषिवर तेरे बिना ।
साड्डे बिछड़े कौन मिलौंदा ऋषिवर तेरे बिना ।।

श्रद्धानन्द ने खाई बताओ क्यों गोली ।
आर्य मुसाफिर खेले, लहू से क्यों होली ।
इन्हे राह ते कौन लगौंदा, ऋषिवर तेरे बिना।।

दुश्मन ज़माना था, दयानन्द निराला ।
खाए ईंट पत्थर पीया ज़हर का प्याला ।
सानु अमृत कौन पिलौंदा, ऋषिवर तेरे बिना ।।

किसे हाल वी तू छड्डी न सच्चाईयाँ ।
दूर कित्ती कौम दी तू लख्खा बुराइयाँ ।
साड्डी बिगड़ी कौन बनौंदा ऋषिवर तेरे बिना ।।

दयानन्द की अग्नि से, लेकर शरारे ।
उठो आर्य वीरो, कसम खाओ सारे ।
साड्डा होर न कोई होणां, ऋषिवर तेरे बिना ।।

रचना :– कंचन कुमार

वे ऋषिया तेरी गल विच

तर्ज : कैसेट ऋषि के तराने में सुन

जान दे दी तू ने जग लई बन्देया ।
वे ऋषिया तेरी गल विच सच्चाई है ।
ओ तू ते दुनिया जगाई है ।।

एक ईश्वर दा सारे जग नू तू ही पाठ पढ़ाया ।
परमेश्वर दा ना ओ३म् है संगताँ नूँ बतलाया ।
उसकी कोई नहीं मूर्ति – गल तू ने समझाई ।।

स्वर्ग नरक है इस धरती पर तू ने बात बताई ।
जीव की सेवा जप तप तीरथ नारी शक्ति जगाई ।
स्वस्ति पंथा मनु चरेम की तूने अलख जगाई ।।

भूत प्रेत और सूर्य ग्रहण या ज्योतिष लगन के किस्से।
जन्म पत्र नहीं शोक पत्र है दयानन्द ने दस्से ।
जीवित मात पिता की सेवा सच्ची भक्ति बताई ।।

लोगों सुन लो दयानन्द ने छूआ छूत मिटाया ।
आडम्बर नूं दूर करन लई आर्य समाज बनाया ।
दयानन्द जया नईं कोई मिलनाँ 'कंचन' बात बताई ।।

रचना :– कंचन कुमार

ए ऋषि तू ने

तर्ज : जाने क्यों लोग मुहब्बत किया करते हैं

ए ऋषि तू ने हलाहल पीकर ।
ज़िन्दगी दी हमको दर्द में जीकर ।।
तेरे एहसानों का बदला न चुका पायेंगे।
सदियाँ गुज़रेंगी तुमको न भूला पायेंगे।।

कोई खंजर दिखाता था, कोई पत्थर बरसाता था ,
कहीं थे रोटी के लाले, तो कोई ज़हर पिलाता था ।
दुनिया का मेला था, दयानन्द अकेला था ,
सारा जहाँ था एक तरफ, और ऋषि अलबेला था ।
आर्य दीवानों से , कितने परवानों से ,
जगमगा दी महफिल, वेद के गानों से ।
शम्माँ जो तुमने की रौशन, उसे फैलायेंगे ।।

विकट बिजली चमकती हो, भयंकर घन गरजते हों ,
उठी हो आंधियां भीषण, निरन्तर जल बरसता हो ।
शबनम के धारों में, पतझड़ में खारों में ,
आँधी हो या तूफान, या जलते अंगारों में ।
हर तरफ घूमे , मस्ती में झूमे ,
आज सारी दुनिया तेरा दर चूमे ।
तेरे बलिदानों की गाथा आज हम गायेंगे ।।

रचना :– कंचन कुमार

गूंज रही है आज

तर्ज : ऋषि के तरानें में सुनें

गूंज रही है आज दिशाएं गूंज रहा ये चमन है ।
क्रांति दूत हे दयानन्द तुम्हे सौ सौ बार नमन है ।।
नाम तुम्हारा रहेगा जग में जब तक चाँद गगन है ।
क्रांति दूत हे दयानन्द तुम्हे सौ सौ बार नमन है ।।

सच्चे शिव की खोज में ही तुमने सर्वस्व लगाया था ।
तुमने वेदों की वाणी का अमृत हमें दिलाया था ।।
तुमने सब सुख छोड़ दुखों को अपने गले लगाया था ।
अंधकार में आशाओं का तुमने दीप जलाया था ।।
आज तेरे आदर्शो पर नतमस्तक तेरा वतन है ।
क्रांति दूत हे दयानन्द तुम्हे सौ सौ बार नमन है ।।

राह दिखाई तुमने हमको उस पर सदा चलेगे हम ।
जिन सपनों को छोड़ गए उनको साकार करेंगे हम ।।
कितने ही तूफान उठे पर उनसे नहीं डरेंगे हम ।
मातृ भूमि की बलिवेदी पर सौ सौ बार मरेंगे हम ।।
कोटी – कोटी मानव करते नत होकर तुम्हे नमन है ।
क्रांति दूत हे दयानन्द तुम्हे सौ सौ बार नमन है ।।

रचना :– कंचन कुमार

आओ के सुनायें

कव्वाली

आओ के सुनाये दयानन्द के तरानें ।
वो फरिश्ता था, देवता था कोई माने या न माने ।।

मूल शंकर था नाम जिसने व्रत को धारा था ।
देखा शिव रात को उसने अजब नजारा था ।।
एक चूहा जो चढ़ा पिण्ड़ी के ऊपर आकर ।
सोचा वो शिव भी क्या चूहे से आज हारा था ।।
मोरवी गाँव का गुर्जर प्रदेश का वासी ।
चूहे की बात से बस बन गया वो संन्यासी ।।
आओ के सुनाये .....

तू ने भटकी हुई दुनियां को राह दिखाई थी ।
तू ने प्यारी पताका ओ३म की फहराई थी ।।
दिया था वेद ज्ञान सत्य का प्रकाश दिया ।
तू ने दुनियां को एक उत्साह और उल्लास दिया ।।
श्रद्धानन्द, लाजपत, लेखराम हंसराज ।
जगमगाई जिनसे प्यारे तेरी संस्था आर्य समाज ।।
आओ के सुनाये .....

रचना – कंचन कुमार

वेदां वाले

तर्ज : जाने वाले ओ जाने वाले , फिल्म – हिना

किया तू ने हमको वेदों के हवाले ।।
वेदां वाले ओ वेदां वाले.....
ऋषिवर तेरी जय होवे , गुरूवर तेरी जय होवे

लौटें वेदों की ओर , तेरा नारा था ।
आयें ओ३म ध्वजा के नीचे , तुमने पुकारा था ।।
तुमको शत नमन है सबके रखवालें ।
वेदां वाले ओ वेदां वाले.....

सुखी जन की आशा में स्वयं दुख ही भोगा ।
तुमसा न था कोई , न आगे भी होगा ।।
तुम्हारा ये एहसाँ चुका न सकेंगे ।
किया तुमने जो वो भूला न सकेगे ।
किये जिन्दगी में – 2, तुम्ही ने उजाले ।।
वेदां वाले ओ वेदां वाले.....

जब अविद्या का तम भू पे छाया था ।
तब हमको जगाने तू दयानन्द आया था।।
हो गया अमर तू , पीये वि ा के प्याले ।
वेदां वाले ओ वेदां वाले.....

रचना – कंचन कुमार

तेरे कारण

तर्ज – दमा दम मस्त कलन्दर

ओ देव दयानन्द देख लिया तेरे कारण
जन जन को, हम सबको, मिला है यह नवजीवन ।
तुझे है सौ सौ वन्दन, करें तेरा अभिनन्दन । ओ देव.....

हुआ अज्ञानता का दूर अन्धेरा ।
घर घर ज्ञान के दीप जले तेरे कारण । जन जन .....

झाड़ झंखाड़ तूने जड़ से उखाड़ा ।
बगिया में नये नये फूल खिले तेरे कारण। जन जन.....

फटे हुए थे यहां दिलों के दामन ।
प्यार की सुई से सब हैं सिले तेरे कारण। जन जन .....

भाई से भाई बिछुड़ चुके थे ।
सदियों बाद फिर आन मिले तेरे कारण। जन जन.....

ग़ैर की धमकियों से दबने वाले ।
ख़तम हुए हैं सब सिलसिले तेरे कारण। जन जन .....

हम इक फूंक से ही उड़ जाते थे।
'पथिक' तूफान से भी सब न हिले तेरे कारण। जन जन

आर्य समाज

तर्ज : मैं हूं गंवार मुझे सब से है प्यार

जग में जिए सबके लिए देव दयानन्द का यह आर्य समाज ।
दुनियां कहे करता रहे आर्य समाज सारी दुनियां पे राज ।
जग में जिए सब .....

धारण जब से नाम किया, पल भी नहीं आराम किया ।
सबकी नज़र हैरान हुई, जीवन में वह काम किया ।
धरती पे जिसकी मिसाल नहीं आज ।
जग में जिए सब .....

तूफानों से लड़ता रहे, चीर के सागर बढ़ता रहे ।
सह न सके अन्याय कभी, जुल्म के आगे अड़ता रहे ।
बंधा रहे सर पे सफलता का ताज ।
जग में जिए सब .....

फर्ज में दिन और रात है क्या, सांझ है क्या परभात है क्या।
पर उपकार की राहों में, इस जीवन की बात है क्या।
प्यारी इसे जान से वतन की है लाज ।
जग में जिए सब .....

दुखियों का ग़मख़ार है यह, देश का पहरेदार है वह ।
भारत के दुश्मन के लिए दो धारी तलवार है यह ।
करता है " पथिक " यह सबका इलाज ।
जग में जिए सब .....

ऋषि आ गया

तर्ज – बेशक मन्दिर मस्ज़िद तोड़ो बुल्लेशाह यह कहता

बालुकण वर्षा की बूंदे, ये आकाश के तारे ।
उपकार दयानन्द ऋषि के लोगों, गिन सकता न कोई सारे ।
घर घर में थी फिर जहालत सबके दिल पर वही छा गया ।
इक निराला वेदों वाला ऋषि आ गया ......

वह ऋषि आ गया जी, वह ऋषि आ गया जी ।
हां वह ऋषि आ गया जी, आ गया ऋषि आ गया । ।
इक निराला वेदों वाला ऋषि आ गया .....

वैदिक धर्म तजा दुनियां ने, और मज़हब लाख बनाए ।
आर्य जाति पड़ी सदियों, से मुरदा कौम कहाए ।
तभी जान में जान आ गई, ऐसा बढ़िया गीत गा गया ।
इक निराला वेदों वाला ऋषि आ गया .....

भारत वर्ष गुलामी वाला, कब से था बोझ उठाए ।
आगे बढ़कर उस योगी, ने बन्धन तोड़ गिराए ।
और सामने जो भी आया, नतमस्तक होकर चला गया ।
इक निराला वेदों वाला ऋषि आ गया .....

कितनी बार घने संकट के, बादल थे घिर घिर आए ।
टंकारा के ब्रह्मचारी ने, मार के फूंक उड़ाए ।
लगे काँगपने सभी विरोधी 'पथिक' ज़माना डगमगा गया।
इक निराला वेदों वाला ऋषि आ गया .....

ए ऋषि याद आए

तर्ज – साथिया नहीं जाना के जी न लगे

ए ऋषि याद आए ज़माना तेरा ।
सारे जग ने जाना फसाना तेरा।।
ए ऋषि याद.....

हवा प्रतिकूल थी, नहीं अनुकूल थी।
समझा न जग तुमको बड़ी भारी भूल थी।
ऐसे समय में जगाना तेरा ।।
ए ऋषि याद......

चले छोड़ बस्ती को, तज बुत परस्ती को।
ठुकराया उदयपुर में, लाखों की हस्ती को।
त्याग भरे जीवन का फसाना तेरा।।
ए ऋषि याद......

आधियारी रात में, कोई न था साथ में।
पाखण्ड़ खण्ड़नी थी, वेद थे हाथ में।
निराकार प्रभु को सच बताना तेरा।।
ए ऋषि याद.....

कार्तिक का महीना था, अभी और जीना था।
अपनों ने जहर दिया, वो भी तुझे पीना था।
'याद' जहर पीकर मुस्कराना तेरा ।।
ए ऋषि याद.....

वीर बलिदानी

तर्ज – तेरे चेहरे से नज़र नहीं हटती नज़ारे हम क्या देखें

स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदानी ओ तेरे तों ज़माना सदके ।
बैठी दिलां विच तेरी कुर्बानी ओ तेरे तों ज़माना सदके ।।
स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदानी .....

मिले जा बरेली विच ऋषि दयानन्द सी ।
मिट गईयां शंकां सारी मुंह होया बंद सी ।।
आई सोचां ते विचारां च रवानी ओ तेरे तों ज़माना सदके ।
स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदानी .....

जंगलां उजाड़ां विच गुरुकुल खोल के ।
शिक्षा गवाची होई लभ लई टटोल के ।।
आंदी मोड़ के तूं सभ्यता पुरानी ओ तेरे तों ज़माना सदके ।
स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदानी .....

सच दियां राहवां उत्ते पैर तूं वधाया सी ।
गोलियां दे अग्गे सीना तान के वखया सी ।।
मोटे अखरां च लिखी ए कहानी ओ तेरे तों ज़माना सदके ।
स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदानी .....

मज़हबी दीवाना इक गोलियां चला गया ।
"पथिक" शहीदां विच नां तेरा आ गया ।।
वारी देश उत्तों सारी ज़िंदगानी ओ तेरे तों ज़माना सदके ।
स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदानी .....

ऋषि ने जलाई

तर्ज – यह माना मेरी जां मुहब्बत सज़ा है

ऋषि ने जलाई है जो दिव्य ज्योति
जहां में सदा यों ही जलती रहेगी ।
हज़ारों व लाखों को रस्ता मिलेगा
करोड़ों के जीवन बदलती रहेगी ।

अविद्या, अभाव और अन्याय जड़ से,
हिलाने, जलाने, मिटाने की खातिर।
दयानन्द के जां निसारों की टोली,
कफ़न बांध सर पे निकलती रहेगी।

जिधर से भी गुज़रेगी जिस वक्त लेकर,
यह हाथों में पाखण्ड, खण्डनी पताका।
धर्म देश जाति के सब दुश्मनों को,
यह पैरों के नीचे मसलती रहेगी।

पहाड़ों से भिड़ना तूफानों से लड़ना,
जनम से ही हम को सिखाया ऋषि ने।
सदा मुश्किलों से, निडर जूझने की,
तमन्ना दिलों में मचलती रहेगी ।

सुनो कान धर कर ऐ दुनियां के लोगो,
"पथिक" आज से इन दीवानों की मस्ती।
सदाचार का भाल ऊंचा करेगी,
दुराचार का सर कुचलती रहेगी।

बोलियां

1 बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया चाये ।
महा ऋषि दयानन्द ने साडे सुत्ते होए भाग ज़गायं ।

2 बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया छोले ।
वेख के पाखण्ड खण्डनी , दिल पाखण्डियां दे डोले ।

3 बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया छल्ला।
इक पासे जग सारा इक पासे दयानन्द कल्ला ।

4 बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया फीते ।
जिन्ने उपकार ऋषि दे ऐने होर नहीं किसे ने कीते ।

5 बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया लोई।
सारा जग छान मारेया डिठा ऋषि वरगा न कोई ।

6 बारहीं बरसीं खट्टन गया तेखट्ट के लयाया वहियां।
स्वामी दयानन्द तेरियां सारे जग विच धुम्मां पईयां ।

7 बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया गन्ने ।
ऋषि मुनि योगी देवता तैनूँ कुल दुनियां पई मन्ने ।

8 बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया दाणे ।
केहड़ा ए विद्वान् जग ते जेहड़ा गुण तेरे न जाणे ।

9 बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया गानी ।
कौन करे रीसां तेरियां तू एं वीर पुरु ा लासानी ।

10 बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया ढेरे ।
जोगिया टकारे वालया जाईये 'पथिक' सदके तेरे ।

दयानन्द की प्रतिज्ञा

तर्ज–है प्रीत जहां की रीत सदा

गुरुदेव प्रतिज्ञा है मेरी पूरी करके दिखलादूँगा ।
इस वैदिक धर्म की वेदी पद मैं जीवन भेंट चढ़ादूँगा ।।
गुरुदेव प्रतिज्ञा है मेरी .....

धन पास नहीं तन मन अपना श्री गुरुचरणों में धरता हूं ।
गुरु आज्ञा पालन करने की मैं आज प्रतिज्ञा करता हूं ।।
अपना सर्वस्व लुटा कर भी अपना कर्त्तव्य निभा दूँगा ।
इस वैदिक धर्म की वेदी पर .....

जन हित के लिए विष के प्याले अमृत करके मैं पी लूँगा ।
उफ़ तक न करुंगा शोलों पर हंसते हंसते मैं जी लूँगा ।।
कांटों से भरी इन राहों पे फूलों की तरह मुस्का दूंगा ।
इस वैदिक धर्म की वेदी पर .....

पश्चिमी सभ्यता के बढ़ते तूफ़ानों का मुँह मोड़ूँगा ।
मैं सागर को मथ डालूँगा पर्बत का मस्तक फोड़ूँगा ।।
वेदों की अमृतवाणी का मैं घर घर नाद बजा दूंगा ।
इस वैदिक धर्म की वेदी पर .....

जब शिष्य आपका उठ कर के वेदों का बिगुल बजाएगा ।
इक बार ज़माना ऋषियों का फिर'पथिक' लौटकर आएगा ।।
भारत की पावन धरती को फिर से मैं स्वर्ग बना दूंगा ।
इस वैदिक धर्म की वेदी पर .....

बशर न मिला

तर्ज – बहर तवील

वेदों वाले ऋषिवर तेरी शान का सारी दुनियां में कोई बशर न मिला।
हमने इनसान देखे सुने हैं बड़े कोई इनसान तुझसा मगर न मिला।।
वेदों वाले ऋषिवर तेरी शान का .....

तू दया और आनन्द ही सब जगह सच्चा हमदर्द बन के लुटाया गया।
चुन लिए तूने कांटे सभी राह के फूल इस पर बिछाता गया।।
वेद मार्ग हमें तूने दिखला दिया तेरे जैसा कोई राहबर न मिला।
वेदों वाले ऋषिवर तेरी शान का .....

कितना पानी है यह जानने के लिए मैं समन्दर में गोता लगाऊं तो क्या।
या दिखाने को सूरज चमकता हुआ एक छोटा सा दीपक जलाऊं तो क्या।।
तेरी तारीफ़ कैसे करूं मैं बयां मेरी वाणी को ऐसा असर न मिला।
वेदों वाले ऋषिवर तेरी शान का .....

तूने दरिया बहाया है जो ज्ञान का वह प्रलय तक निरन्तर बहेगा यहां ।
कोई ताकत इसे रोक सकती नहीं दिन प्रतिदिन यह बढ़ता रहेगा यहां।।
जो प्रभावित न हो तेरे उपकार से देश भर में कोई एक घर न मिला।
वेदों वाले ऋषिवर तेरी शान का .....

धर्म की राह पर मुस्कराते हुए ज़िन्दगी मौत का खेल खेला गया ।
तेरी हिम्मत हिमालय से ऊंची बड़ी तू हज़ारों के अन्दर अकेला गया।।
न झुका हो 'पथिक' जो तेरे सामने कोई दिल न मिला कोई सर न मिला।

वेदों वाले ऋषिवर तेरी शान का .....

दयानन्द स्तुति

दया व आनन्द का भण्डार दयानन्द थे।
दिव्य शक्तियों का चमत्कार दयानन्द थे।

अग्नि के समान प्रखर तेजमय स्वरूप था,
वज्र के समान हाथ पांव सेहतमन्द थे।

पृथ्वी के समान सहनशीलता थी देह में,
गगन के समान सदा हौसले बुलन्द थे।

पवन के समान सुघड़ बाजुओं में ज़ोर था,
सैंकड़ों तूफ़ान उन की धमनियों में बन्द थे।

सत्य वेद धर्म उन्हे जान से अज़ीज थे,
छल कपट फ़रेब दग़ा झूठ नापसन्द थे।

चन्द्रमा की चांदनी सी चक्षुओं में चमक थी,
मधुर मधुर शब्द मृदुल कण्ठ की सुगन्ध थे।

भावमय हृदय में थी गंभीरता समुद्र की,
विश्व के इतिहास को लगाए चार चन्द थे।

'पथिक' धर्म कर्म सभी वेद के अधीन थे,
सम्प्रदाय तन्त्र से स्वतन्त्र व स्वछन्द थे।

कहो किसने आकर

कहो किसने आकर के हम को जगाया ।
दयानन्द आया, दयानन्द आया ।
लुटेरों से आकर किसने बचाया ।
दयानन्द आया, दयानन्द आया ।
अनाथों का कोई ठिकाना बचाया ।
बिलखते थे बच्चे को खाना नहीं था।
कहो किसने अनाथालय खुलवाया ।
दयानन्द आया, दयानन्द आया ।
थे नारी को पैरों की जूती बताते ।
नहीं कोई नारी को विद्या पढ़ाते ।
कहो इनको अधिकार किसने दिलाया ।
दयानन्द आया, दयानन्द आया ।
अछूतों को ठुकराता सारा जमाना,
बड़ी भूल की थी समझकर बेगाना।
कहो इनको छाती से किसने लगाया ।
दयानन्द आया, दयानन्द आया ।
बन जाते थे हिन्दु मुस्लिम ईसाई,
उतारे जनेऊ थी चोटी कटाई।
शुद्धि की बूटी को किसने पिलाया ।
दयानन्द आया, दयानन्द आया ।
कहो वेद की बंसी किसने बजाई,
धर्म हेतु मरने की कला सिखलाई ।
कहो जड़ की पूजा को किसने छुड़ाया ।
दयानन्द आया, दयानन्द आया ।

एक तरफ था देव दयानन्द

तर्ज – एक ताल पर तोता बोले

एक तरफ था देव दयानन्द , एक तरफ जग सारा ।
लाखों संकट सहे ऋषि ने , सत पथ नहीं विसारा ।
ऋषिवर प्यारा–दयानन्द प्यारा।

आर्य जाति की रक्षा हेतु , तन की सुध बिसराई ।
ताप मोचनी सत्य ज्ञान की , ज्योति आन जगाई ।
ज्योति आन , जगाई , जग में धूम मचाई ।
वेद ज्ञान का सूरज चमका दूर किया अधियारा ।
ऋषिवर प्यारा–दयानन्द प्यारा।।१।।

सहनी पड़ी विकट बाधायें , विघ्न विपदा पथ आये ।
आगे बढ़ते रहे निरन्तर , किन्चित न धबराये ।
किंचित ना धबराये , आगे कदम बढ़ाये ।
पोप और पाखण्डी भागे , कर गये सभी किनारा ।
ऋषिवर प्यारा–दयानन्द प्यारा।।२।।

स्वंय पिया विष , जग वालों को अमृत पान कराया ।
फिरे भटकते जो जन उनको , वैदिक पथ दर्शाया ।
वैदिक पथ दर्शाया , पापों से था बचाया ।
सभी विरोधी बने ऋषि के प्रभु का एक सहारा ।
ऋषिवर प्यारा–दयानन्द प्यारा।।३।।

पास न धन, चेली, न चेला, न कोई शासन बल था ।
साथी संगी सखा ना 'राधव' प्रभु विश्वास अटल था ।
प्रभु विश्वास अटल था , जीवन बना सफल था ।
जन्मे जहाँ पै ऋषि दयानन्द , धन्य भूमि टंकारा ।
ऋषिवर प्यारा–दयानन्द प्यारा।।४।।

ऐ स्वामी दयानन्द तूने

तर्ज – साबरमति के संत तूने

ऐ स्वामी दयानन्द तूने कर दिया कमाल ।
मुरदा थी मेरी कौम तूने प्राण दिये डाल ।।

अज्ञान अंधेरा था चारों ओर ही छाया ।
पापी पाखंडियों ने था अन्धेर मचाया ।।
दे कर सन्देश वेद का हम को किया निहाल ,
ऐ स्वामी.....

विधवा अनाथ और अछूतों को बचाया ।
शुद्धि का चक्र आके तूने ऐसा चलाया ।।
लाखों ही लाल जाति के गिरते लिए सम्भाल ,
ऐ स्वामी.....

नन्द लाल आने वाला समय ही बताएगा ।
जब सारा विश्व वेद का नारा लगाएगा ।।
वेदों की शिक्षा रोक सके किसी की है मजाल ,
ऐ स्वामी.....

चाँद से फूल से या मेरी जुबा से सुन लो ।
हर जगह आपका किस्सा है, फजाँ से सुन लो ।।
सबको आता नहीं जख्मों को सजाकर जीना ।
तेरा हर काम निराला था, जहाँ से सुन लो ।।

•—• दयानन्द का ऋण •—•

दयानन्द का ऋण चुकाते चलेंगे ।
मधुर वेद वीणा बजाते चलेंगे ।।

सोते हुओं को जगाते चलेंगे ।
रोते हुओं को हंसाते चलेंगे ।१।।

जिन्हे मांस मदिरा का चस्का लगा है ,
उन्हे दूध गाय का पिलाते चलेंगे ।।२।।

हमारी जो मां बहिने भटकी हुई हैं ।
उन्हे वेद विद्या पढ़ाते चलेंगे ।।३।।

अछूतों को दे लात ठुकरा रहे जो ।
उन्हे हम गले से लगाते चलेंगे ।।४।।

धर्म छोड़ अपना विधर्मी बने जो ।
उन्हे धर्म वैदिक पर लाते चलेंगे ।।५।।

जो वापस में दिन रात लड़ते झगड़ते ।
उन्हे संगठन कर मिलाते चलेंगे ।।६।।

दयानन्द की आज्ञा पालन करेंगे ।
बनें आर्य जग को बनाते चलेंगे ।।७।।

श्रद्धानन्द गुण गान

तर्ज – दिल के अरमाँ

गोलियां सीने पे खाके चल दिये ।
प्यास कातिल की बुझाके चल दिये ।।

रक्त से वैदिक बगीचा सींचकर ।
धर्म हित मरना सिखाके चल दिये ।।

झुक रहीं संगीन सीना सामने ।
कदम आगे को बढ़ाके चल दिये ।।

गंगातट जंगल में मंगल कर दिया ।
कांगड़ी गुरूकुल बनाके चल दिये ।।

जामा मस्जिद पे खड़े हो एक दिन ।
वेद ध्वनि सबको सुनाके चल दिये ।।

पाठ समता का पढ़ाया आपने ।
चक्र शुद्धि का चलाके चल दिये ।।

भाई से भाई मिलाया था गले ।
प्रेम की गंगा बहाके चल दिये ।।

सदियों तक वो गुज़रे ज़माने याद आयेंगे ।
कसक बनकर दर्द के तराने याद आयेंगे ।।
खिजा ने लूट लिया तेरी आरजू का चमन ।
जियेंगे जब तलक तेरे फसाने याद आयेंगे ।।

दयानन्द ने जगाया

दयानन्द ने जगाया सारी दुनियां को ,
इक्क रस्ता दिखाया सारी दुनियां को ,
रहे थे सो उठा गया वोह सारी दुनियां को ,

दिये जहर किसी ने पत्थर मारे ,
नहीं झुके ऋषि ना हारे।
सच्चाई को सुना गया वो सारी दुनियां को।।

बन बैठे थे ईश्वर जो घर–घर ,
ललकारा ऋषि ने उनको जाकर।
पाखंडों से बचा गया वोह सारी दुनियां का।।

नारी शुद्र वेद नहीं पढते थे ,
पोप पाखंडों से सारे लोग डरते थे।
वेदों को पढा गया वोह सारी दुनियां का।।

भाई–भाई लड़े हम गुलाम हुये ,
सुनो लोगो ऋषि ने वचन कह।
मिलकर रहो सिखा गया वोह सारी दुनियां का।।

जाते जाते ऋषि ने इक्क काम किया ,
लेखराम गुरूदत्त श्रद्धानन्द दे दिया।
अमृत को पिला गया वोह सारी दुनियां का।।

रौशन मुनारा

तर्ज – बहुत प्यार करते है

दयानन्द था एक रौशन मुनारा ।
कि चमका दिया जिसने संसार सारा।।
दयानन्द था एक रौशन मुनारा .....

ज़मी के कणों को गगन पर चढ़ाया ,
सितारों को जिसने ज़मीं पे उतारा ।
दयानन्द था एक रौशन मुनारा .....

ख़िजां को चमन से उठा दूर फेंका ,
बहारों को लाया वह पकड़ के दोबारा।
दयानन्द था एक रौशन मुनारा .....

उधर हो गया रूख उठे हर तूफां का ,
किया जिस तरफ उस ऋषि ने इशारा।
दयानन्द था एक रौशन मुनारा .....

भंवर में पड़े हम बहे जा रहे थे ,
उसी की कृपा से मिला फिर किनारा।।
दयानन्द था एक रौशन मुनारा .....

'पथिक' महर्षि की दया गर न होती ,
जहां में न होता ठिकाना तुम्हारा।
दयानन्द था एक रौशन मुनारा .....

दयानन्द की जय

दयानन्द की जय मनाते चलेंगे।
कदम आगे आगे बढ़ाते चलेंगे।

बनायेंगे हम आर्य संसार भर को ,
ध्वजा ओम् की हम उठाते चलेंगे।

जो आवाज़ सुन के खुले पोल सब की ,
वह वेदों का डका बजाते चलेंगे।

रहें ब्रह्मचारी बनें व्रत धारी ,
सदाचार के गीत गाते चलेंगे।

कभी शान ऋषियों की मिटने न देंगे ,
यह है फ़र्ज अपना निभाते चलेंगे।

दबेंगे नहीं हम किसी के दबाये ,
दबायें जो उस को दबाते चलेंगे ।

न मर कर मिले जब तलक जिन्दगानी ,
चह जीवन की बाज़ी लगाते चलेंगे।

'पथिक' और होंगे मुकर जाने वाले ,
कहेंगे जो कर के दिखाते चलेंगे ।

भजन

ऋषि तेरा दुनियां में आना भूल जाने के काबिल नहीं है
क्यों न सन्देंश तेरा सुनायें, क्या सुनाने के काबिल नहीं है।

हो रही थी विवाह की तैयारी, खुशी परिवार में छाई भारी
सुख के साधान को ठोकर थी मारी, सब मे तेरी तरह दिल नही था।
ऋषि तेरा दुनियां में आना .....

पोल पाखण्ड की तुने खोली, वेद संवत थी जो बाते बोली,
मर गया दुसरो के लिए तू क्या सुनाने के काबिल नहीं है।
ऋषि तेरा दुनियां में आना .....

जो जगन्नाथ क्या मन मे आया, दूध में विष हलाहल पिलाया,
दे गया धन से भर कर के थैली अब ठहराने के काबिल नहीं है।
ऋषि तेरा दुनियां में आना .....

गायें क्या गाये तेरे तरानें, तुम ऋषि थे धर्म के दिवाने,
गीत वो जिस में न नाम तेरा, वह सुनाने के काबिल नहीं है।
ऋषि तेरा दुनियां में आना .....

उनकी तुरबत पर एक भी दीया नहीं ।
जिनके लहु से जलते थे चराग ।।
आज रौशन है उनके मकबरे ।
जो चुराते थे, शहीदों के .कफन ।।

लड़ने वाले हजारों को

तर्ज – छुप गए तारे नज़ारे

लड़ने वाले हजारों को बेहाल कर गया।
वो ऋषि था अकेला कमाल कर गया।।

चाहता था लाना समय वो पुराना ,
कि स्वर्ग बनाना ज़माना।
पर अविद्या ने सब को आन धेरा था,
सब दिशाओं में छाया घोर अन्धेरा था।
बन गया शमा उजाला बेमिसाल कर गया।।
वो ऋषि था.....

कहीं पे ईसाई कही मिरजाई ,
कुछ अपने ही भाई कसाई ।
सब दुकाने सजाए यहाँ बैठे थे,
लूट भारी मचाए यहाँ बैठे थे।
पोप और पंडों की दुकानों पे हड़ताल कर गया।।
वो ऋषि था.....

ऋषि अलबेला कि हर दुख झेला,
विरोधियों में खेला अकेला।
जिसने बाईबिल की सारी पोल खोली थी,
और कुरां की भी कैसी बीन बोली थी।
'पथिक' गपोड़े पुराणों की पड़ताल कर गया ,
वो ऋषि था.....

मेरा रंग दे बसन्ती

तर्ज – ओ मेरा रंग दे–बंसन्ती चोला–मेरा

ओ मेरा रंग दे बंसन्ती चोला वे रंग दे चोला ।

इसी चाँदनी चौक के अन्दर धंटा घर है खंड़ा हुआ ।
धंटा घर के नीचे लोगों शेर बबर था अड़ा हुआ ।
खोलो गन मंशीनें खोलो मैंने सीना खोला ।।
ओ मेरा रंग दे बंसन्ती .....

जाम मस्जिद की मीनार पे श्रद्धानन्द जब आते है ।
दयानन्द की जय के नारो से आकाश गुंजाते है ।
मस्जिद में छा गया सन्नाटा वेद मन्त्र जब बोला ।।
ओ मेरा रंग दे बंसन्ती .....

जलियां वाले बाग के अन्दर कौन मोर्चे पर आया ।
कांग्रेस अध्यक्ष बना और हिन्दी को ही अपनाया ।
अली ब्रदर और गांधी के आगे भी जो न डोला ।।
ओ मेरा रंग दे बंसन्ती .....

यहीं रंग रंगाने स्वामी दिल्ली मे ही आते है ।
आर्य जाति की खातिर वो प्राणों की भेंट चढ़ाते है ।
कातिल ने भी पीकर पानी फिर पिस्तौल को खोला।।
ओ मेरा रंग दे बंसन्ती .....

सिर्फ बिजली ही गिरी हो ये जरूरी तो नहीं ।
आग गुलशन में बहारे भी लगा सकती हैं ।।
किसी की आगोश में हो सर जरूरी तो नहीं ।
नींद तो दर्द के बिस्तर पे भी आ सकती है ।।

महापुरूष जनम लेंगे

तर्ज – ऐ मेरे दिले नादां

महापुरूष जनम लेंगे सुना न जहा ँहोगा।
गुरूदेव दयानन्द सा दुनिया में कहाँ होगा।।

आकाश के आंगन मे जब तक ये सितारे हैं।
इन चाँद सितारों में जब तक ये नज़ारे है।
तब तक ऐ ऋषि तेरा अफसाना बयां होगा।।

भूचाल भी आयेंगे आंधी अंधियारे भी।
तूफ़ान भी उट्ठेंगे पतझड़ भी,बहारें भी।
महकेगा तेरा गुलशन जब दौरे खिजाँ होगा।।

धन रूपी मालो ज़र का संसार पुजारी है।
गुरूदेव दयानन्द ने इन्हे ठोकर मारी है।
इस तरह ज़माने से कोई न गया होगा।।

बेदर्द ज़माने ने क्या क्या न सितम ढाए।
एहसान दयानन्द के जायें नहीं गिनवाएं।
"बेमोल" ऋषि तेरा नहीं कर्ज़ अदा होगा।।

दुनियां वालो देव दयानन्द

तर्ज – कसमें वादे प्यार वफा सब

दुनियां वालो देव दयानन्द दीप जलाने आया था ।
भूल चुके थे राहें अपनी वह दिखलाने आया था।।

घोर अंधेरा जग में छाया, नज़र नहीं कुछ आता था।
मानव मानव की ठोकर से जब ठुकराया जाता था।
आर्य जाति सोई पड़ी थी घर घर जाके जगाता था।।

बंट गया सारा टुकड़े टुकड़े भारत देश जगीरों में।
शासन करते लोग विदेशी जोश वही था वीरों में।
भारत माँ को मुक्त किया जो जकड़ी हुई थी ज़जीरों में।।

जब तक जग मे चार दिशाएं कुदरत के ये नज़ारें हैं।
सागर नदियां धरती अम्बर जग में पर्वत सारे हैं।
'पथिक' रहेगा नाम ऋषि का जब तक चांद सितारे हैं।।

आग को ऐसा सहेजा क्रान्ति फूंकी थी निराली।
वेद की जलती ऋचा में जिन्दगी ऐसी तपा ली ।
साधना आलोक की अभिव्यक्तियाँ सब लय हुई।
तुम जले तो भोर आया, तुम बुझे तो थी दिवाली।।

ऐ ऋषि तुमपे सदक़े है

तर्ज – आज क्यो हम से पर्दा है

सदके है, सदके है, सदके है, ए ऋषि तुमपे सदके है।

जो भी सत्संग में तेरे आया है उच्च पदवी को उसने पाया है ।
मुक्त कडियों से कर दिया तूने और खुशियों से भर दिया तूने ।
भटकते दुनियां वाले फिरते थे पाप के गड्ढे में जा गिरते थे ।
वेद मार्ग तूने दिखलाया था कर्म करके जीना सिख लाया था।
चाहे संभव हो गिनती तारों की असम्भव गिनती तेरे उपकारों की।।
सदके है, सदके है .....

तेरी राहों में चाहे कांटे थे फूल ही तूने सबको बांटे थे ।
तेज खंजर दिखलाए जाते थे ईंट पत्थर बरसाए जाते थे ।
ईश अकित मूंह को मोड़ा न सहन शक्ति को तू ने छोड़ा न ।
क्रोध न आने दिया था मन में प्यार ही देखता जीवन में।।
सदके है, सदके है .....

जो न माली बनके तू आ जाता आज ये गुलशन भी मुस्का जाता।
खूब से इसको है सीचा तू ने पाप की दलदल से खीचा तू ने ।
दिल में लोगो ने पर बिहलाया न और तुम्हे जीवन में अपनाया ।
भाग्य दुनिया का धुल गया होता काश तुमको पहले समझा होता।
आज पछताने से न रहते है सभी दुनिया वाले ये कहते है ।
सदके है, सदके है .....

योगी आया था

योगी आया था वेदों वाले किया उजियाला।
दुनिया में सच्चे ज्ञान का, वो तो देवता था सारे जहान का ।।

ज्ञान की बहा के गंगा मिला गया वो अपने ज़िगर के टुकड़ो को ।
मुद्दत से गुलामी थी मिटा गया वो भारत माँ के दुखड़ो को ।
योगी आया, पाखण्ड ढाया, लोगो का समझाया ।
ए लोगो, ज़रा ये सोचो ये कारण है अज्ञान का ।।
वो तो देवता था .....

आड़ में धर्म की दीन दुखियों पर, जुल्म गुज़ारे जाते थे ।
अनेको द्रौपदी सरीखी सतियों के, चीर उतारे जाते थे ।
आठ वर्ष की विधवा रोती – रो रो आँसू खोती ।
सोती जाति, को आन जगाया और पूज्य बताया ।
जो कारण था सम्मान का ।।
वो तो देवता था .....

आदि में थी दया अन्त में आनन्द था नाम भी कितना प्यारा था ।
स्वयं ज़हर पीया अमृत पिला गया कभी न हिम्मत हारा था ।
ईश्वर भक्ति, की. ही शक्ति, इतनी शक्ति रखती ।
जगती सारी ने ऋषि पहचाना और वेदज्ञान माना ।
जो कारण स्वाभिमान का ।।
वो तो देवता था .....

एक जंगल में एक नई बस्ती

एक जंगल में नई बस्ती बसा दी तूने ।
वक्ते पत्थर पे सफल जोंक लगा दी तूने ।

लोग मानें या न मानें था करिश्मा कोई ।
अर्थियाँ जितनी उठीं डोली बना दी तूने ।।१।।

सच तो यह है कि किया काम निराला ऐसा ।
आग पानी में दयानन्द लगा दी तूने।।२।।

चाँद सूरज व सितारे भी थे कैद जहाँ।
ऐसे अम्बर पे नई धूप खिला दी तूने।।३।।

जिसके शासन में न छुपता था कभी सूर्य यहाँ ।
ठोकरें मार के कुर्सी ही हिला दी तूने।।४।।

जिनके पावों में न पायल थी न बिंदिया मुख पर ।
ऐसी अबलाओं की दुनिया सजा दी तूने।।५।।

दूसरा कृष्ण तुम्हें कहने को जी करता है ।
वेद की बाँसुरी फिर जग को सुना दी तूने।।६।।

तेरी निष्ठा का भला मूल्य चुकाएँ क्यों कर ।
बुझती हुई वेद शम्माँ फिर से जला दी तूने।।७।।

आ लौट के आजा

तर्ज – आ लौट के आजा मेरे मीत

आ लौट के आजा दयानन्द, तुझे हम आज बुलाते है
तेरा महका हुआ है गुलशन, तुझे हम आज बुलाते है ।

१ शिवजी का व्रत कर शंका त्याग कर निकला था जोगी निराला,
नारी का उद्धार किया, महा उपकार किया राह को दिखानेवाला,
तुझे बाँधती है मन में उमंग – हम आज बुलाते है......

२ लोगों को अमृत दिया खुद ने जहर पिया स्वामी थे भाव निराले
सबका कल्याण किया विद्या का दान जग में किये थे उजाले
मेरे ऐसे थे स्वामी दयानन्द – हम आज बुलाते है......

३ वेदों का ज्ञान है बड़ा हो महान है ऋषि ने था जो सुनाया
कैसा निराला ज्ञान सारे जगत का मान स्वामी तू फिर से सुनाया
तू ने जीने का सिखाया नया ढंग
तेरी सब याद मनाते है – हम आज बुलाते है......

दयानन्द का पता

दयानन्द दा पता चांद तारों से पूछुंगा ,
दहकती आग के अंगारो से पूछुंगा।
हटा के मौजों को तूफान की धारों से पूछुंगा।
दयानन्द दा .....

मेरे गमख्वार को मैं राक के बीमारों से पूछुंगा,
पहाड़ों से चट्टानों से में दीवारों से पूछुंगा।
दयानन्द दा .....

यही अरमान है दिल में कि में टँकारे जाऊंगा,
ऋषि पर जो बनाये गीत खुश होके गाऊंगा।
अगर सूरत दयानन्द की वहां न देख पाऊंगा ,
कसम अल्लाह की खाकर मैं खूं अपना बहाऊंगा।
तड़प कर शिव के मंदिर की मीनारों से पूछुंगा ।
दयानन्द दा .....

मेरे गुरूवर की भक्ति की यह आवाज दुनियां को सुनाऊंगा।
गुरूवर को गर वहां न देख पाऊंगा तो मैं धूनी रमाऊंगा।
कसम अल्लाह की दीदार बिन न लौट आऊंगा।
बिगड़ कर जोश में खो होश अजमेर के दयारों से पूछुंगा।
दयानन्द दा .....

रचना – रहमुदीन डागर

ए दुनिया बता

ए दुनिया बता इससे बढकर, अब और हकीकत क्या होगी ।
जाँ दे दी तलाशे – हक के लिए, फिर और इबादत क्या होगी ।।

ओरों के लिय मरने वाले, मर मर कर हमेशा जीते हैं ।
जिस मौत से दुनिया डर रश्क करे, उस मौत की कीमत क्या होगी ।।

यों तो हर रोज की तारीकी, लेती है पयाम उजाले का ।
जिसने ये जहां पुरनूर किया, उस रात की कीमत क्या होगी ।।

खंजर भी चलाये अपनों ने, जहर भी पिलाये अपनों ने ।
अपनों के एहशां क्या कम है, गैरों से शिकायत क्या होगी ।।

सदियों की खिजा के बाद खिला, एक फूल उसे भी तोड़ दिया ।
कलियों को मसलने वालों से, फूलों की हिफाज़त क्या होगी ।।

उस हिम्मत के सदके उस जज़्बे सादिक पै कुर्बां ।
इससे बढकर हक की खातिर कातिल से बगावत क्या होगी ।।

चाँद से फूल से या मेरी जुबा से सुन लो ।
हर जगह आपका किस्सा है, फजाँ से सुन लो ।।
सबको आता नहीं जख्मों को सजाकर जीना ।
तेरा हर काम निराला था, जहाँ से सुन लो ।।

देखो स्वामी दयानन्द

देखो स्वामी दयानन्द क्या कर गया ।
गुलशने हिन्द को , फिर हरा कर गया ।।
कुल मजाहिब में ऐसी , मची खलबली ।
गोया महशर का आलम , बया कर गया ।।
देखो स्वामी .....
तर्क के तीर बरसाये , इस जोर से ।
होश पाखण्डियों के , हवा कर गया ।।
देखो स्वामी .....
उम्र भर से बए , हक परस्ती रहा ।
जान तक राहे हक में , फिदा कर गया ।।
देखो स्वामी .....
वे बुरे हैं जो कहते हैं , उसको बुरा ।
वो भला था हमारा , भला कर गया ।।
देखो स्वामी .....
गर्क होने को थे , जो कि मँझधार में ।
ना खुदा उनको मर्दे , खुदा कर गया ।।
देखो स्वामी .....
अय 'मुसाफिर' उसी से , सफा पाओगे।
जो कि तजबीज – स्वामी दवा कर गया ।।
देखो स्वामी .....

चमकेंगे जब तलक

तर्ज – रहा गर्दिशों में हरदम

चमकेंगे जब तलक यह, सूरज व चांद तारे।
हम हैं ऋषि दयानन्द, जब तक ऋणी तुम्हारे।।
भारत की जब ये नैया, मंझधार में पड़ी थी।
तूने ही बनके खेवट, पहुँचा दिया किनारे।।
चमकेंगे जब .....
हमको पिलाया अमृत, खुद जहर पी गया तू।
तू ने हमारी खातिर, सब कष्ट थे संहारे।।
चमकेंगे जब .....
कातिल को अपने स्वामी, जीवन का दान दे तू।
तेरी जान के भी दुश्मन, तुम्हें जान से थे प्यारे।।
चमकेंगे जब .....
तू वो दीया था जिसने, लाखों दीये जलाये।
दी रोशनी 'पथिक' को, घर जगमगाये सारे।।
चमकेंगे जब .....

ज़िन्दगी को मैं तपाए दे रहा हूं ।
स्वर्ण को कुन्दन बनाये दे रहा हूं ।।
आँधियों में रौशनी मिलती रहेगी ।
आज एक दीपक जलाये दे रहा हूं ।।

लेके वेदों का प्रचार

तर्ज – लेके पहला–पहला प्यार

लेके वेदों का प्रचार, करने जाति का उद्धार
टंकारा से आये थे देव दयानन्द।।टेर।।

पत्थर के अनेको देव बना कर पूजते रहे।
ईश्वर का बहाना भोग आप खाते रहे।
ऋषि ने दिया शुद्ध विचार, कहा प्रभु निराकार जी। टंकारा।

भागवत पुराणों को खोल दई सारी पोल।
वेद का प्रचार किया ओ३म् नाम बोल बोल।
भागे पाखण्डी गंवार, मानी स्वामीजी से हार जी। टंकारा।

स्त्रियों को जूती जब पैरों की बनाते रहे।
वेद और विद्या से अज्ञानी बचाते रह ।
देखो घोर अन्धकार, कहा स्वामी ने ललकार जी। टंकारा।

अछूतों को गले आके ऋषि ने लगाया था।
वेद पढो आर्य बनो ऋषि ने बताया था।
दूर कीने अत्याचार, कीना सबके ऊपर प्यार जी। टंकारा।

दयानन्द ने विश्व

दयानन्द नें विश्व, सारा जगाया ।
हमें अपनी मंजिल का रास्ता बताया ।।
गुलामी में सब कुछ, भुलाया हुआ था ।
ख्यालात पर बहम, छाया हुआ था ।।
बुराइयों की गठड़ी को लादा हुआ था ।
पौराणिक अडम्बर, रचाया हुआ था ।।
जहालत का पर्दा जहाँ से हटाया ।
दयानन्द ने .....

मुस्लमा, ईसाई – बन जाते सारे ।
बिछुड़े जाते आँखों से, आँखों के तारे ।।
कहीं के न रहते मुसीबत के मारे ।
भटकते हुए फिर, रहें थे बिचारे ।।
भँवर में फँसे थे, किनारे लगाया ।
दयानन्द ने .....

दयानन्द ने वेद, विद्या पढ़ाई ।
थी सोई हुई कौम, आकर जगाई ।।
प्रभु एक है यह, हकीकत बताई ।
न पत्थर को पूजो खरी कह सुनाई ।।
दयानन्द नें धर्म, वैदिक बताया ।
दयानन्द ने .....

दयानन्द देव वेदों का

तर्ज – ये मेरा प्रेम पत्र पढ़कर

दयानन्द देव वेदों का, उजाला ले के आये थे।
करों में ओ३म् की पावन, पताका ले के आये थे।।

थे धन धाम मठ मन्दिर, न संग चेली न चेला था।
हृदय में थे अटल विश्वास, प्रभु का ले के आये थे।।

गऊ विधवा दलित दुखिया, अनाथों दीनजन के हित,
नयन में अश्रु कण मानस में, करुणा ले के आये थे।।

अविद्या सिंधु से अगणित, जनों को पार करने को,
परम सुख दायिनि सद्ज्ञान, नौका ले के आये थे।।

कोई माने न माने सच तो, ये ऋषि राज ही पहले,
स्वराज स्थापन का मंत्र, सच्चा ले के आये थे।।

पिलाया जहर का प्याला, उन्ही नादान लोगों ने,
कि वे जिनके लिए, अमृत का प्याला ले के आये थे,
ै
प्रकाशादशं शिक्षा का, पुनः विस्तार करने को,
वही प्राचीन गुरूकुल का, सन्देशा ले के आये थे।।

मधुर वेद वीणा

तर्ज – तुम्ही मेरे मन्दिर

मधुर वेद वीणा बजाये चला जा।
जो सोते है उनको जगाये चला जा

निराकार प्रभु है सभी में समाया।
सभी जन है अपने न कोई पराया
धृणा फूट मन से मिटाये चला जा। मधुर वेद वीणा .....

चुराना नहीं लोभ वश धन किसी का,
दुखाना नहीं तुम कभी मन किसी का।
मनुजता जगत को सिखाये चला जा। मधुर वेद वीणा .....

अखिल विश्व में भावना भव्य भरके,
स्वकर्त्तव्य उदेश्य को पूर्ण करके,
तू ऋषिराज का ऋण चुकाये चला जा। मधुर वेद वीणा .....

प्रकाश आर्य ग्रामों हाट घर में,
नगर देश देशान्तरों विश्व भर में।
दयानन्द की जय मनाये चला जा। मधुर वेद वीणा .....

दयानन्द ने गर

दयानन्द ने गर बजाई न होती,
तो वेदार हरगिज खुदाई न होती ।

न बातिल परस्ती जमाने से मिटती,
जो वेदों की बंशी बजाई न होती।

निशां राम का कृष्णा का मिट चुका था,
ऋषि ने जो हल–चल मचाई न होती।

न इस्लाम के ढोल की पोल खुलती,
जो स्वामी ने हिम्मत दिखाई न होती।

न बिलबन्द होता कभी बाइबिल का,
खुदा वन्द की जग हसाई न होती।

जहन्नुम व जन्नत के खुलते न किस्से,
याँ अशेंवरी की सफाई न होती।

न वेदों की सुनता कोई आहोजारी,
यतीमों के दुःख की सुनाई न होती।

पता हिन्दुओं का जहां में न मिलता,
जो शुद्धि की बूटी पिलाई न होती।

न सुनने को मिलते वतन के तरानें,
अगर देश–भक्ति सिखाई न होती।

जहालत की काली धटायें न टलती,
जो स्वामी की जलवानुमाई न होती।

'मुसाफिर' अगर जिन्दगी तू न पाता,
धरम पै जो गर्दन कटाई न होती।

गीत का स्वर–फूल अर्पित है तुम्हें,
यह ह्रदय अनुकूल अर्पित है तुम्हें,
देश संवर्धक, सुधारक, सारथी,
देश की यह धूल अर्पित है तुम्हें ।

हकपरस्ती के लिये

हकपरस्ती के लिये खुद को मिटाकर चल दिये ।
वेद के फरमान को घर–घर सुनाकर चल दिये ।।

धर्म की खातिर कटी उनके जिस्म की बोटियाँ ।
नारा प्यारे ओ३म् का वह तो लगाकर चल दिये ।।

वे कफस में बन्द कर दी थी आरजू दिल में यही ।
धर्म को आजाद कर दो यह सुनाकर चल दिये ।।

ए शहीदो ! कौम देती है तुम्हें सौ धन्यवाद ।
खून देकर धर्म का गुलशन खिलाकर चल दिये ।।

वह हकीकत की तरह जिन्दा रहेंगे तापदब ।
धर्म पर जो वीर अपना सर कटा कर चल दिये ।।

नमन तेरी भावना के दीप को,
नमन है तेरी स्वदेशी प्रीत को,
नमन तेरे कर्म की हर रीत को,
नमन तेरी आर्य–धर्म–प्रतीति को ।

जनहित में दे गया

जनहित में दे गया अपनी जान, स्वामी वेदाँ वाला।
उर में कुछ लाया था अरमान, स्वामी वेदाँ वाला ।।१।।

योगी अलख जगाई, वेदों की महिमा गाई।
ईश्वर को नित्य अनादी माना, स्वामी वेदाँ वाला ।।२।।

ईश्वर है एक बताया, युक्तो से यह समझाया।
कण–कण में व्यापक है भगवान, स्वामी वेदाँ वला ।।३।।

ईश्वर है अजर अजन्मा, उसकी है कैसी प्रतिमा।
पत्थर को समझो ना भगवान, स्वामी वेदाँ वाला ।।४।।

दुनियां के दम्भी कांपे, पापी पाखण्डी कांपे।
हृदय में लाया था सद्ज्ञान, स्वामी वेदाँ वाला ।।५।।

दलितों से प्रेम सिखाया, बिछुड़ों को गले लगाया।
नवयुग का कर गया निर्माण, स्वामी वेदाँ वाला ।।६।।

कल्पित भय भूत भगाये, कायर भी शूर बनाये।
मुर्दों में डाली फिर से जान, स्वामी वेदाँ वाला ।।७।।

देखा न कोई देवता

देखा न कोई देवता प्यारे ऋषि की शान का
सर पर सही मुसीबतें सोचा भला जहान का।

पी पी के प्याले जहर के करते रहे उपकार जी
चिंता थीं प्यारे धर्म की धोखा नहीं था जहान का ।

घर–घर बजाई वेद की प्यारी ऋषि ने बांसुरी
ऐसा दीवाना था गुरू बंसी की मोठी तान का

पत्थर व इटें खा गये करते गये फिर नेकियां
कैद में क्या सुन सकूं ऐसे ऋषि महान का

वैदिक धर्म के वास्ते लाखों सही मुसीबतें
जीवन में एक बार भी आया न ध्यान मान का

ब्रह्मा से ले के जैमिनी करते रहे जिस काम की
शैदा बनाया देश को वेदों के ही फरमान का ।।

वैदिक नाद बजाओ

तर्ज – सिर जावे ता जावे (या) रंग दे नाम विच चोला

वैदिक नाद बजाओ, आर्य वीर गण आओ।
समय नहीं सोने का प्यारो, करवट ले अब आंख उबारो
बिगड़ी बात बनाओ– हे आर्य वीर गण आओ.....

प्रबल शत्रुओं ने ठाना, छल प्रपंच से तुम्हे मिटाना।
सावधान हो जाओ– हे आर्य वीर गण आओ.....

देश काल की ओर निहारो–करो संगठन वैर विसारो।
भ्रातृ भाव दरसाओ– हे आर्य वीर गण आओ.....

बनो भीम अर्जुन से बल में, धूम मचा दो युद्ध स्थल में।
विजयी शूर कहाओ– हे आर्य वीर गण आओ.....

प्रान्त प्रान्त में नगर नगर में – डगर डगर में अरू घर घर में।
ऋषि सन्देश पढ़ाओ– हे आर्य वीर गण आओ.....

वेदों की शिक्षा चित धरिये, यम नियमों का पालन करिये।
संध्या हवन रचाओ– हे आर्य वीर गण आओ.....

धर्म प्रचारक दयानन्द के, देश सुधारक दयानन्द के।
बार बार गुण गावो– हे आर्य वीर गण आओ.....

'प्रकाश' निज कर्त्तव्य कर्म पर, सत्य सनातन वेद धर्म पर।
निर्भय शीश कटाओ– हे आर्य वीर गण आओ.....

महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्रभातफेरी शोभा–यात्रा गीत

ओ३म्–ध्वज–गीत

जयति ओ३म् ध्वज व्यामविहारी।
विश्व प्रेम प्रतिमा अति प्यारी।।जयति।

सत्य–सुधा बरसाने वाला, स्नेह–लता सरसाने वाला ।
सोम्य–सुमन विकसाने वाला, विश्व–विमोहक भव–भय हारी ।। जयति ।

इसके नीचे बढ़े अभय मन, सत्पथ पर सब धर्मधुरी जर ।
वैदिक रवि का हो शुभ उदयन, आलोकित होवे दिशि सारी ।। जयति ।

इससे सारे क्लेश ामन हों, दुर्मति दानव द्वेष दमन हों ।
अति उज्जवल अति पावन मन हों, प्रेम तंरग बहे सुखकारी।। जयति ।

इसी ध्वजा के नीचे आकर, ऊंच नीच का भेद भुलाकर ।
अगले विश्व मुद मंगल गाकर, पन्थाई पाखण्ड बिसारी।। जयति ।

इस ध्वज को लेकर हम कर में, भर दें वेद–ज्ञान घर–घर में ।
भग शान्ति फैले जग भर में, मिटे अविद्या की अँधियारी।। जयति ।

विश्व प्रेम का पाठ पढ़ावे, सत्य अहिंसा को अपनावें ।
आग में जीवन ज्योति जगावें, त्यागपूर्ण हो वृति हमारी।। जयति ।

ध्वज–गीत

विजयी विश्व ओ३म् का प्यार, झण्ड़ा ऊंचा रहे हमारा,
सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला
वीरों को हर्षा ने वाला, आर्य जाति का तन, मन, सारा
झण्ड़ा ऊंचा रहे हमारा ।

देखकर जोश बढ़े एक क्षण में, कांपे शत्रु देखकर मन में ।
इस झण्ड़े के नीचे निर्भय मिट जाए भय संकट सारा ,
झण्ड़ा ऊंचा रहे हमारा ।

आओं प्यारे वीरो आओ, वेद धर्म पर बलि बलि जाओ ।
एक साथ सब मिलकर गाओ प्यारा आर्य वर्त हमारा ,
झण्ड़ा ऊंचा रहे हमारा ।

शान न इसकी जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये ।
विश्व विजय करके दिखलायें तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ,

झण्ड़ा ऊंचा रहे हमारा ।

बज गया नगाड़ा

बज गया नगाड़ा वेदां दा,
बज गया नगाड़ा वेदां दा।

जद दे आये दयानन्द प्यारे,
खुल गये सारे धर्म द्वारे ।

ज्ञान भण्डारा वेदां दा ......
न पुरब न पश्चिम स्वामी,
घट घट बसदा अन्तरयामी।
ए साफ इशांरा वेदां दा ......

हर जा प्रभु व्यापक भेद बतावे,
बुतखाने काबे कोई जावे।
ए हुकुम प्यारा वेदां दा ......

परम पिता ने रच संसारा।
ज्ञान दित्ता ए वेद द्वारा।
तू पकड़ सहारा वेदां दा ......

अपना आप करे सब धन्धा,
नहीं मोहताज पैगबर दा होदां।

ओ ही रचने हारा वेदां दा ......

सिर जावे तो

सिर जावे ते जावे
मेरा वैदिक धर्म न जावे ।

धर्म दी खातिर बाल हकीकत ,
सिर अपना कटवावे ।

धर्म दी खातिर ऋषि दयानन्द ,
पल–पल जहरां खावे ।।

धर्म दी खाति लेख राम जी ,
छुरा पेट विच खावे ।।

धर्म दी खातिर श्रद्धानन्द जी ,
सीने गोली खावे ।।

धर्म दी खातिर राजपाल जी ,
छुरा पेट विच खावे ।।

धर्म दी खातिर बन्दा वैरागी ,

अंग अंग कटवावे ।।

ओ३म् का झंडा आया

ओ३म् का झण्डा आया–यह ओ३म् का झण्डा आया
ऋषि ने लाखों कष्ट उठायें
जहर पिया और पत्थर खायें ।

फिर इसको लहराया, यह ओ३म् का झण्डा आया
श्रद्धानन्द ने गोलियां खा के
लेख राम ने जान गवां के ।

ऊंचा इसे उठाया, यह ओ३म् का झण्डा आया ।
गुरूदत्त का प्राणों से प्यारा ,
हंसराज ने जीवन सारा ।

इसकी भेंट चढाया– यह ओ३म् का झण्डा आया ।
आर्य जनों की ाान यही है ,
आन यही और बान यही है।

ऋषियों ने फरमाया–यह ओ३म् का झण्डा आया ।
लाख मुसीबत सिर पै धरेंगे ,
हम इसकी अब रक्षा करेंगे ।

हमने 'पथिक अपनाया' यह ओ३म् का झण्डा आया
।।

हम दयानन्द के

हम दयानन्द के सैनिक हैं ,
दुनियां में धूम मचा देंगे।
यदि पर्वत आये रास्ते में ,
ठोकर से उसे गिरा देंगे।

हम पुत्र हैं भारत माता के ,
माता पै संकट आया है।
हम उसके बन्धन काटेंगे ,
और अपना शीश कटा देंगे।

दुनियां में अन्धेरा फेला है ,
पापों ने डेरा डाला है।
प्रकाश वेद की ज्योति से ,
हम उस को खूब मिटा देंगे।

है श्रद्धानन्द और लेखराम जी ,
लक्ष्य हमारे जीवन के।
हम हंसराज हो जायेंगे ,
बस धर्म पै जान गंवा देंगे।

वेदों का डंका

वेदों का डंका आलम में
बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने
हर जगह ओ३म् का झण्डा फिर
फहरा दिया ऋषि दयानन्द ने

अज्ञान अविद्या की हर सू
धन घोर घटायें छाई थीं
कर नष्ट उन्हें जग में प्रकाश
फैला दिया ऋषि दयानन्द ने

कब्रों पै सर को पटकते थे
कोई दैरों हरम में झटकते थे ।
दे ज्ञान उन्हें मुक्ति का मार्ग
बतला दिया देव दयानन्द ने ।

सब छोड़ चुके थे धर्म कर्म
गौरव गुमान ऋषि मुनियों का ।
फिर सन्ध्या हवन यज्ञ करना
सिखला दिया देव दयानन्द ने ।

बलिदान किया बलि वेदी पर
जीवन प्रकाश हंसते हंसते ।
सच्चे रहबर बन कर सबको
चेता दिया देव दयानन्द ने ।

वेदों का डंका आलम में बजवा दिया ।

दयानन्द की जय

दयानन्द की जय मनाते चलेंगे ।
कदम अपना आगे बढ़ते चलेंगे ।
बनायेंगे हम आर्य संसार को ,
ध्वजा ओ३म् की हम उठाते चलेंगे।
जो आवाज़ सुन के खुले पोल सब की,
वो वेदों का डंका बजाते चलेंगे ।
रहे ब्रह्मचारी बने व्रत धारी ,
सदाचार के गीत गाते चलेंगे।
कभी शान ऋषियों की मिटने ने देंगे ,
यह है फर्ज अपना निभाते चलेंगे ।
दबेंगे नहीं हम किसी के दबाये ,
दबाये जो उस को दबाते चलेंगे।
न मर कर मिले जब तलक ज़िन्दगानी ,
यह जीवन की बाजी लगाते चलेंगे ।
'पथिक' और होगे मुकर जाने वाले ,

कहेंगे जो कर के दिखाते चलेंगे।

जुग–जुग राज

जुग जुग राज सवाया वेदां वालेदा ,

भगवा वेश ने हाथ कमंडल,
महिला नूं छड़ टूरिया जंगल।
देवता बन के आया, वेदां वाले दा ,
जुग जुग राज ......

ऋषि दा सरताज दयानन्द,
योगीश्वर महाराज दयानन्द।
देव लोक तों आया, वेदां वाले दा ,
जुग जुग राज ......

दुख्यिां दे दुख टारन वाला,
डुबदा देश उभारन वाला ।
भारत मां दा जाया, वेदां वाले दा ,
जुग जुग राज ......

प्यारे ऋषि दे वचन प्यारे,
डुलदे भारत वासी तारे ।
सुत्ता देश जगाया, वेदां वाले दा ,

भारत का कर गया

भारत का कर गया बेड़ा पार वो मस्ताना योगी,
सोतों को कर गया फिर बेजार वो मस्ताना योगी।

ईटें और पत्थर खाये गोली से न घबराये,
घातक से कर गया अपने प्यार वो मस्ताना योगी।

भूले थे वेद की वाणी करते थे सब मन मानी,
वेदों का कर गया फिर प्रचार वो मस्ताना योगी।

विधवा उद्धार करके शुद्धि प्रचार करके,
दलितों पर कर गया फिर उपकार वो मस्ताना योगी।

कोई शुभ काम न था प्रीति का नाम न था,
कैसी बहा गया प्रेम की धार वो मस्ताना योगी।

पापी थे पाप करते ईश्वर से न थे डरते,
जड़ से मिटा गया अत्याचार वो मस्ताना योगी।

वेदों की रक्षा करके अपना सत्यार्थ रचके,
जाति का कर गया हल्का भार वो मस्ताना योगी।

धन्य है तुमको

धन्य है तुमको ए ऋषि, तूने हमें जगा दिया।
सो सो के लुट रहे थे हम, तूने हमें जगा दिया।

धन्धों को आखें मिल गई, मुर्दो में जान आ गई।
जादू सा क्या चला दिया अमृत सा क्या पिला दिया।

वाणी में क्या तासीर थी तेरे वचन में ऐ ऋषि।
कितने शहीद हो गए कितनों ने सर कटा दिया।।

अपने लहू से लेखराम तेरी कहानी लिख गया।
तूने ही लाला लाजपत शेरे बब्बर बना दिया।

श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने सीने पै खाई गोलियां।
हंस–हंस के हंसराज ने तन मन व धन लुटा दिया।

तेरे दिवाने जिस घड़ी दक्षिण दिशा को चल दिये।

हैरत में लोग रह गए, दुनिया का दिल हिला दिया।।

जग में वेदों की

जग में वेदों की, बांसुरिया बजाई ऋषि ने।
बजाई ऋषि ने, बजाई ऋषि ने, जग में......

भूले हूए मार्ग अपने को, भारत के नरनारी
छाई हुई अविद्या की थी, जग में घोर अंधियारी
वैदिक धर्म डगरिया, बताई ऋषि ने।।

विद्यालय गुरूकुल खुलवाये, जारी करी पढ़ाई।
जहाँ अविद्या का डेरा, वहाँ ज्ञान की गंगा बहाई।।
बनके अमृत की बदरिया, बरसाई ऋषि ने।

भैंसा बकरे काट, काट, देवी पर खुन चढ़ाते।
यज्ञों में पशुबलि देते थे, कैसा पाप कमाते।
सर पे पापों की गठरिया, गिराई ऋषि ने।।

विधवा दीन अनाथों का, ऋषि बनकर रहा सहारा।
पोप और पांखडी डरकर, कर गये साफ किनारा।

‘राधव’ डूबती नवरिया, बचाई ऋषि ने।

उठो सोने वालो

उठो सोने वालो जगाने को आये,
समाचार सुन्दर सुनाने को आये।

बनो सारे ज्ञानी पढो वेद वाणी।
तुम्हे वेदवाणी सुनाने को आये।

मानव जनम विश्वभर में है उत्तम।
इसी को सफल हम बनाने को आये।

करो काम पर दुःख ने होवे किसी को।
प्रभुवर की आज्ञा बताने को आये।

सभी का भला हो सभी का भला हो।
यही भाव दिल में बिठाने को आये।

सदा आप सत्संग में आया करें।
प्रतिज्ञा सभी से कराने को आये।

रचाया है उत्सव सभी आर्यों ने।
अवश्य ही पधारें बुलाने को आये।

महोत्सव की शोभा तुम्ही से बढ़गी।

यह संदेश घर–घर सुनाने को आये।

दयानन्द की फौज

फौज आई है स्वामी दयानन्द की।
धूम छाई है स्वामी दयानन्द की।।

देखो झण्डा लिए ओ३म् का हाथ में।
सारे छोटे–बड़े चल दिये साथ में।
जय बुलाई है स्वामी दयानन्द की।।

आगे बढ़ता रहेगा सदा काफिला।
ऋषि मुनियों की आशी ा लेकर चला।
रहनुमाई है स्वामी दयानन्दक की।।

आर्य जाति जो थी नींद में सो रही।
दिन पे दिन इसकी हालत बुरी हो रही।
अब जगाई है स्वामी दयानन्दक की।।

नींद में वक्त अनमोल खोना नहीं।
जागने का समय है कि सोना नहीं।
यह दुहाई है स्वामी दयानन्दक की।।

रात बीती खातम ये अंधेरा हुआ।
जागो–जागो ‘पथिक’ अब सवेरा हुआ।

यह गवाही है स्वामी दयानन्दक की।।

अब रस्ता कर दो

अब रस्ता कर दो खाली आई फौज दयानन्द वाली
वैदिक धर्म की जय के नारे, बोलो निर्भय ऋषि के प्यारे।
पत्थर बरसे या अंगारे, बाजे बजा के ताली। आई........

वेदों पर विश्वास हमारा, बलिदानी इतिहास हमारा ।
देशा हमें प्राणों से प्यारा हम है इसके माली। आई........

अत्याचार मिटाऐंगे हम, छुआ छूत भगाएगे हम।
पाखण्ड दुर्ग को ढाएगें हम, हम है वीर बलशाली ।।

हम कांटों पर चल सकते है, अग्नि में भी जल सकते है।
विष पान हम कर सकते हैं धर्म की कर रखवाली ।।

धर्म युद्ध में जब डट जाना, फिर न पीछे कदम हटाना।
हंसते हंसते प्राण गंवाना, चले चाल मतवाली ।।

लेखराम की ढाल बनों तुम, हंसराज की चाल बनो
त ु म ।
श्रद्धानन्द से वीर बनों तुम, मत भूलो दिवाली ।।

जब तक सूरज चन्द्र रहेगा

जब तक सूरज चन्द्र रहेगा श्रद्धानन्द
पहले मुन्शी राम कहाते
फिर महात्मा दा पद पाके
बन गए श्रद्धानन्द रहेगा श्रद्धानन्द

धन माता जिस बाल ये जाया।
वेदा दा जिस नाद बजाया।
अमर गुरू दा नन्द रहेगा श्रद्धानन्द

करदा सी शुद्धि दी मनादी
जिसके कारण गोली खादी
पाया परमानन्द रहेगा, श्रद्धानन्द

दिल्ली दे विच खोल के सीना

आगे सन गोरी संगीना
सबदे मूंह होए बन्द रहेगा श्रद्धानन्द

श्रद्धा और आनंद की

श्रद्धा और आनंद की एक खान श्रद्धानन्द थे।
धर्म पर जो हो गए बलिदान श्रद्धानन्द थे।।

बिन्दुओं के रक्त से सीची थी वैदिक वाटिका।
महर्षि जो राम थे हनुमान श्रद्धानन्द थे।।

चांदनी का चौक दिल्ली की मिले है साक्षी।
तान कर सीना खड़े बलवान श्रद्धानन्द थे।।

जामा मस्जिद के खड़े मिम्बर पर दिल्ली खास में।
वेद मंत्रों का किया गुन्जान श्रद्धानन्द थे।।

बिन्दुओं के रक्त से सींची थी वैदिक वाटिका।
महर्षि जो राम के, हनुमान श्रद्धानन्द थे।।

शुभ नाम था

शुभ नाम था प्यारा वो स्वामी श्रद्धानन्द।
भारत का था दुलारा वो स्वामी श्रद्धानन्द।।

वैदिक धर्म की सबसे जागी लगन थी उसमें।
बना था सबसे न्यारा वो स्वामी श्रद्धानन्द।।

था देश भक्त पूरा चमका फलके पे जाकर।
अपने वतन का प्यारा वो स्वामी श्रद्धानन्द।।

शुद्धि का काम पूरा करके दिखलाया उसने।
दुखियों का सहारा वो स्वामी श्रद्धानन्द।।

मुबारक आर्य जाति जिसमें हो ऐसे शैदा।
जिस कौम को उबारा वो स्वामी श्रद्धानन्द।।

शहीदों में नाम पाया शहादत का जाम पीकर।
एक वीर था प्यारा वो स्वामी श्रद्धानन्द।।

वीर बलिदानी

स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदानी ओ तेरे तो ज़माना सदके।
बैठी दिलां विच तेरी कुर्बानी ओ तेरे तो ज़माना सदके।
स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदानी.......

मिले जां बरेली विच ऋषि दयानन्द सी।
मिट गईयां शंका सारी मुंह होया बंद सी।
आया सेचां ने विचारां च खाली ओ तेरे ज़माना सदके।
स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदानी.......

जंगलां उजाड़ां विच गुरूकुल खोल के।
शिक्षा गवाची होई लभ लई टओल के।
आंदी मोड़ के तूं सभ्यता पुरानी ओ तेरे ज़माना सदके।
स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदानी.......

सच दियां राहवां उत्ते पैर तूं वधाया सी।
गोलियां दे अग्गे सीना तान के वखाया सी।
मोटे अखंरा च लिखी ए कहानी ओ तेरे तो ज़माना सदके।
स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदानी.......

मज़हबी दीवाना इक गोलियां चला गया।

'पथिक' शहीदां विच नां तेरा आ गया।
वारी देश उत्तों ज़िन्दगी ओ तेरे तों ज़माना सदके।
स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदानी.......

नादान लोगों ने उस

नादान लोगों ने उस योगी का भेद नहीं पाया।
कोई कहे मत आ इस द्वारे,
वि ा दाता कहे पत्थर मारे,
क्या जाने किस्मत के मारे,
सुधा कल ा ले आया।
गाली देते नहीं लजाये,
वि ा का प्याला लेकर आये,
योगी मेरा प्रेम दीवाना,
वि ा का घूट उड़ाया।
रोम रोम बन फोड़ा बोला,
मेरा सेवा के कारण था चोला,
खूब करी प्यारे ने लीला,
उसका उसे चढ़ाया।
रोम रोम का बना फववारा,
फूट पड़ी अमृत की धारा,
एक बूदं ने नास्तिक मुनि का,
सारा मोह बहाया।

बार–बार नर जीवन पाऊं,
बार–बार बलिदान चढ़ाऊँ,
ऋण्ज्ञ तो भी मुझ से ऋषि,
तेरा जाए नहीं चुकाया।

हमारा आर्य समाज

देश का सेवक आर्य समाज। धर्म का रक्षक आर्य समाज।
मार्ग दर्शक आर्य समाज। आनन्द वर्धक आर्य समाज।
चुनता है काँटे आर्य समाज। अमृत बांटे आर्य समाज।
काँटे जहालत आर्य समाज। हरे ज़लालत आर्य समाज।
जन हितकारी आर्य समाज। पर उपकारी आर्य समाज।
सत्याचारी आर्य समाज। प्रेम पुजारी आर्य समाज।
स्कूल चलावे आर्य समाज। विद्या पढ़ावे आर्य समाज।
गुरुकुल चलावे आर्य समाज। ज्ञान टओले आर्य समाज।
शुद्धि करावे आर्य समाज। आर्य बनावे आर्य समाज।
यज्ञ रचावे आर्य समाज। सन्ध्या सिखावे आर्य समाज।
बिछुड़े मिलावे आर्य समाज। बिगड़ी बनावे आर्य समाज।
गिरते उठावे आर्य समाज। सब को बढ़ावे आर्य समाज।
प्रेम से बोले आर्य समाज। कभी न डोले आर्य समाज।
संकट झेले आर्य समाज। मौत से खेले आर्य समाज।

पर दुःख ले ले आर्य समाज। जीवन मेले आर्य समाज।
दलितोद्धारक आर्य समाज। परम सुधारक आर्य समाज।
जान से प्यारा आर्य समाज। आंख का तारा आर्य समाज।
सब का न्यारा आर्य समाज। ''पथिक'' हमारा आर्य समाज।

दयानन्द के वीर

दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे।
दयानन्द का काम पूरा करेंगे।

उठाये ध्वजा धर्म की हम फिरेंगे।
उसी के लिए हम जियेंगे मरेंगे।

गुंजायेंगे वेदों को हम गीत गा कर।
दिखायेंगे दुनिया नुरानी बना कर।

उजाड़ेंगे शहरों को जंगल बसा कर।
बितायेंगे जीवन को सच्चा बनाकर।

उठायेंगे ऋषियों की आवाज़ को हम।

बनायेंगे फिर स्वर्ग संसार को हम।

मिटायेंगे सब सम्प्रदायों मतों कों
बनायेंगे फिर आर्य सारे जगत् को।

वही प्रेम गंगा यहां फिर बहेगी।
जो संसार की ताप माला हरेगी।

कहेगा जगत् फिर से इक स्वर में सारा।
वहीं वृद्ध भारत गुरू है हमारा।

हम दयानन्द के

हम दयानन्द के सैनिक हैं दुनिया में धूम मचा देंगे।
यदि आए पर्वत रस्ते में ठोकर से उसे हटा देंगे।

हर आफ़ंत और मुसीबत को हंस–हंस कर सिर पर झेलेंगे।
हम लाज धर्म की रखेगे और अपना आप मिटा देंगे।

हम पुत्र हैं भारत माता के, माता पै संकट आया है।
हम इसके बन्धन कांटेगे और अपना शीश कटा देंगे।

हम भारतीयों के सेवक है यह सब अपने मां जाग हैं।
जहां उनका पसीना टपकेगा हम अपना खून बहा देंगे।

दुनिया में जहालत फैली है, पापों ने डेरा डाला है।

हम नूरे वेद मुकद्दस से यह सब अंधकार मिटा देंगे।

कह दो गुण्डों मुस्टन्डों से हरकत से अपनी बाज़
अ ा य ` ं ।
मैदां में गर डट जायेंगे तो नाकों चने चबा देंगे।

हम कृष्ण युधिष्ठर अर्जुन की संतान हैं ऐ नादां
द ु श म न ।
हम सफल मनोनथ तब होंगे गर धर्म पै जान गंवा
द ` ं ग ` ।

उस परमपिता ने हमको भी बहदत की निशानी सौंपी
ह ै ।
हम डंका वेदे मुकद्दस का सारी दुनियां में बजा देंगे।

स्वामी श्रद्धानन्द

स्वामी श्रद्धानन्द प्यारा है।
तन मन धन जिसने निज देश पे वारा है।
इक नई परभात हुई।
महा ऋषि दयानन्द से जिस दिन मुलाकात हुई।
अंधकार का नाश हुआ।
मिट गए भ्रम सारे चारों ओर प्रकाश हुआ।
दूषित पथ छोड़ दिया।
बिगड़ते जीवन को इतना बड़ा मोड़ दिया।

धन माल सभी अपना।
आर्य समाज को दिया साकार किया सपना।
ऋषिवर के दीवाने ने।
गुरूकुल खोल दिया बन में मस्ताने ने।
अंग्रेज ने मान लिया।
सामने संगीनों के जब सीना तान लिया।
हर दिल लहराया था।
जिस वक्त शुद्धि का यहां बिगुल बजाया था।
दुश्मन बेईमान हुआ।
और स्वामी श्रद्धानन्द का था अमर बलिदान हुआ।
वह काम किया उस ने ।
'पथिक' जाति गिर जाती पर थाम लिया उसने।

देश को जब से

देश को जब से दयानन्द मिल गए।
पष्प वैदिक वाटिका के खिल गए।।
चल पड़े सुख संपदा को छोड़कर।
सत्य वक्ताओं में हो शामिल गए।। देश को.....

तर्क की तलवार जब ली हाथ में,
मिथ्या मत पन्थों के शासन हिल गए।। देश को.....
जहर देकर के किया स्वागत तेरा,
जीत करके हार किसी का दिल गए। देश को.....
विष पिया अमृत पिलाय और को,
प्यारे ऋषिवर पाकर मंजिल गए। देश को.....
बिछड़े भाईयों को मिलाकर प्यार से,
प्रेम की गंगा बहाकर चल दिए। देश को.....
श्रद्धानन्द निर्भीक त्यागी हंसराज,
देश पर मिटने को बिस्मिल चल दिए। देश को.....
जामा मस्जिद से उठी वेद की ध्वनि,
वेदों को पढ़ और पढ़ाकर चल दिए। देश को.....

वेदां दी महिमा

मिल के गावो नर नार महिमां वेदां दी।
चार वेद ईश्वर दी वाणी।
जो ऋषियां मुनियां ने जाणी।
कौन करे इनकार महिमां वेदां दी।।
वेद ही पढ़ना वेद पढ़ाना।
वेद ही सुनना वेद सुनाना।
करो वेद परचार महिमां वेदां दी।।
सब रत्नां दा वेद समन्दर।
सच्ची विद्या इस दे अन्दर।
वेद ज्ञान भण्डार महिमां वेदां दी।।

पं. कंचन कुमार के भजन कैसेट्स/ सी.डी. /वी.सी.डी./पुस्तकें

आडियो कैसेट/सी. डी.			मूल्य/कैसेट सी.डी.
1. उड़ेगा हंस अकेला	(वैराग्य भजन)		25.00 / 45.00
2. परदेसी हंसा	(वैराग्य भजन)		25.00 / 45.00
3. ओ३म् जपों	(जाप भजन)		25.00 / 45.00
4. प्रार्थना सुमन	(प्रार्थना भजन)		25.00 / 45.00
5. सत्संग प्रसाद 1	(भजन प्रवचन)		25.00 / 45.00
6. सत्संग प्रसाद 2	(भजन प्रवचन)		25.00 / 45.00
7. सत्संग सरोवर 1	(भजन प्रवचन)		25.00 / 45.00
8. सत्संग सरोवर 2	(भजन प्रवचन)		25.00 / –
9. अनन्त की ओर	(प्रवचन मृत्यु)		25.00 / 45.00
10. ऋषि के तरानें	(स्वामी दयानन्द भजन)		25.00 / 45.00
11. गायत्री महिमा	(गायत्री भजन प्रवचन)		25.00 / 45.00
12. गायत्री दोहे	(गायत्री जाप सहित)		25.00 / 45.00
13. अन्तर्यात्रा	(ध्यान संगीत, बांसुरी वादन)		25.00 / 45.00
14. ओ३म् शरणम्	(सभी कैसेट के चुने हुए भजन)		25.00 / –
15. प्रार्थना प्रदीप	(सभी कैसेट के चुने हुए भजन)		25.00 / 45.00
16. सत्संग सरोवर 1	(भजन प्रवचन)		वी.सी.डी. 50.00
17. अनन्त की ओर	(प्रवचन मृत्यु)		वी.सी.डी. 50.00
18. तेरा शुक्रिया है	(भजन प्रवचन)		वी.सी.डी. 50.00
19. ओ३म् आनन्द	(भजन प्रवचन)		वी.सी.डी. 50.00
20. प्रार्थना सुमन	(प्रार्थना भजन)	200 पृ ठ	पुस्तक 30.00
21. उमर का पंछी	(वैराग्य भजन)	56 पृ ठ	पुस्तक 10.00
22. प्रेम पुष्पाजंलि	(सद्गुरू भजन)	108 पृ ठ	पुस्तक 20.00
23. ऋषि के तरानें	(स्वामी दयानन्द भजन)	108 पृ ठ	पुस्तक 20.00
24. प्रेरक प्रसंग	(महा पुरूषों के प्रसंग)	144 पृ ठ	पुस्तक 25.00
25. हास्यमेव जयते	(हास्य प्रसंग)	108 पृ ठ	पुस्तक 20.00
26. अनमोल	(अनमोल वचन)	108 पृ ठ	पुस्तक 20.00

कैसेट प्राप्ति स्थान

1. ओ३म् शरणम,
   208–बी, पश्चिम विहार एक्सटे,
   नई दिल्ली–63 — दूरभाष : 25217058
2. मै. गोविन्द राम हासानन्द ,
   4408,नई सड़क दिल्ली, — दूरभाष : 22914945
3. आर्य समाज मंदिर,
   गौडपारा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ — दूरभाष : 07752–220255
4. श्री सुधीर आर्य,
   बंसत साड़ी सेन्टर सदर बाजार,
   बिलासपुर, छत्तीसगढ़ — दूरभाष : 9893121694
5. आर्य प्रकाशन,
   814, कुंडे वालान अजमेरी गेट, दिल्ली — दूरभाष : 23233280
6. श्री गुलशन गोसाई,
   58, आठ मारला कालोनी पानीपत, — दूरभाष : 0180–4091470
7. श्री हरीश सखूजा,
   बी–8, बेसमेन्ट, ओरियन्टल हाऊस
   गुलमोहर एन्कलेव, हौजखास, नई दिल्ली — दूरभाष : 26088111
8. आर्य समाज सैजपुर बोघा,
   अहमदाबाद गुजरात, — दूरभाष : 079–22815216
9. मधुर प्रकाशन,
   2804 बाजार सीता राम, दिल्ली–06, — दूरभाष : 23238631
10. आर्य समाज मंदिर,
    हापुड़ (उत्तर प्रदेश), — दूरभाष : 0122–2311240
11. आर्य समाज मंदिर,
    सेक्टर–22, चण्ड़ीगढ़ पंजाब
12. श्री रमेश भाई लखवानी,
    आर्य समाज, नंकीलेख माउन्टआबू,
    राजस्थान — दूरभाष : 09828612409